श्री राम नाथ कोविन्द, महामहिम राज्यपाल,
बिहार का 'अग्रसेन जयन्ती समारोह' में सम्बोधन
(अग्रसेन भवन, बैंक रोड, पटना, 18.10.2015, अप0 7.00 बजे)

अग्रसेन सेवा न्यास के अध्यक्ष श्री पी0 के0 अग्रवाल जी, बिहार प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अमर अग्रवाल जी, महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह के संयोजक श्री अनिल सिंघानिया जी, अग्रवाल महिला सम्मेलन की अध्यक्ष डॉ0 गीता जैन जी, मीडिया प्रतिनिधिगण, बहनों एवं भाइयों।

अग्रसेन सेवा न्यास, पटना के तत्वावधान में आज आयोजित 'महाराजा अग्रसेन जयन्ती समारोह' में आपने मुझे आमंत्रित किया है, जिसके लिए मैं आप सबको धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

मित्रों ! आप सभी अवगत हैं कि महाराज अग्रसेन जी का शासन–काल द्वापर की समाप्ति और कलियुग के प्रारंभ के सक्रांति–काल का समय रहा है। महाराज अग्रसेन जी की राजधानी अग्रोहा (हरियाणा) आज भी अग्रवाल–समाज के लिए तीर्थ–स्थल की तरह पवित्र और पूजनीय है। बंधुओं ! कोई भी शासक लोकप्रिय कैसे बन जाता है? उसमें जनता की आस्था इतनी प्रबल कैसे हो जाती है? उत्तर सहज है– जिस राज्य का राजा प्रजा के हित में निरंतर चिंतनशील और क्रियाशील रहता है, उसकी प्रजा उससे संतुष्ट रहती है और वह शासक भी अत्यंत लोकप्रिय बना रहता है। राजा अग्रसेन ऐसे ही शासक थे।

आज का लोकतांत्रिक भारत महाराजा अग्रसेन जैसे महापुरूषों की परिकल्पना और प्रयत्नों का प्रतिफल है। महाराजा अग्रसेन के शासन–प्रदेश में प्रजा काफी संतुष्ट रहती थी। कोई किसी का न तो शोषण करता था, न कोई किसी के प्रति द्वेष रखता था। राजा भी प्रजा की कुशलता और कल्याण के लिए चिंतित और प्रयत्नशील रहते थे। परिणाम था कि राजा और प्रजा के बीच अत्यंत ही सौहार्दपूर्ण और सुमधुर सम्बन्ध थे। महाराजा अग्रसेन जी के जीवन–दर्शन एवं उनकी शासन–पद्धति से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हम आज अपने देश में शांति, भाईचारा और राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनानेवाली लोकतांत्रिक शासन–व्यवस्था को सुदृढ़ बनायें तथा अपनी सांविधानिक मर्यादाओं और संकल्पों के प्रति पूर्णतः आस्थावान बने रहें।

मित्रों ! महाराजा अग्रसेन ने निरन्तर अहिंसा को जीवन का परम उद्देश्य बताया। सामाजिक जीवन में सुख, शांति और सद्भावना बनी रहे, इसके लिए यह बेहद जरूरी है कि व्यक्ति हिंसक मनोवृत्ति का परित्याग कर, प्रेम, दया, करूणा, बंधुत्व, ईमादारी, सत्यनिष्ठा आदि सद्गुणों को अपने जीवन में हृदयंगम कर लें। अपने व्यक्तित्व में इन चीजों का समाहार कर ही हम मानव–जीवन के महद् उद्देश्य की ओर अभिमुख हो सकते हैं।

महाराजा अग्रसेन के वंशज अग्रवाल समाज के लोग प्रतिभावान, त्यागी, धर्मनिष्ठ और सदाचारी होते हैं। आप अपनी संस्था 'अग्रसेन

सेवा न्यास' के माध्यम से भी मानव–कल्याण और समाज–सेवा के कतिपय कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं, मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है। आप सबको राज्य में स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाओं की बेहतरी के लिए आधारभूत संरचनाओं आदि को विकसित करने की दिशा में हर तरह से सहयोग करना चाहिए। आज आप प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं कुशल चिकित्सकों को भी अपनी संस्था के तत्वावधान में सम्मानित कर रहे हैं, यह एक प्रशंसनीय कार्य है। मैं पुरष्कृत एवं सम्मानित हुए सभी विद्यार्थियों एवं चिकित्सकों को एक बार पुनः बधाई देते हुए उनके मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

आपकी संस्था मानव–कल्याण के कार्यों में निरंतर लगी रहे और महाराजा अग्रसेन के जीवनादर्श आपके लिए प्रेरणा के पाथेय बने रहें, मैं यह शुभकामना करता हूँ। ज्ञान, कर्म, शक्ति और भक्ति की देवी माँ भगवती दुर्गा की पूजा में हम सभी निमग्न हैं। माँ दुर्गा की कृपा हम सबपर बनी रहे और हम एक सुखमय, शांतिमय और समृद्ध राष्ट्र और बिहार के निर्माण में लगे रहें– हमारी यही मंगल कामना है। आप सबको नवरात्र, दुर्गापूजा और विजयदशमी की बहुत–बहुत बधाई।

जय हिन्द !

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।